आपके अतीत से कोई फर्क नहीं पड़ता, आप हमेश नई शुरूआत कर सकते है।
– अज्ञात

# नेतृत्व परिवर्तन की मांग

**कांग्रेस के एक धड़े ने अपने असंतोष को सार्वजनिक करते हुए राज्य में नेतृत्व परिवर्तन की मांग की है, तभी से प्रदेश की गहलोत सरकार की वैधता पर संदेह जताया जा रहा है। जैसा कि ऐसे मामलों में आम तौर पर होता है, सरकार के बहुमत को लेकर दोनों धड़े परस्पर विरोधी दावे कर रहे हैं।**

नवीन जोशी।

राजस्थान में चल रहा राजनीतिक संकट कुछ ज्यादा ही लंबा खिंचता जा रहा है। जब से सचिन पायलट की अगुआई में कांग्रेस के एक धड़े ने अपने असंतोष को सार्वजनिक करते हुए राज्य में नेतृत्व परिवर्तन की मांग की है, तभी से प्रदेश की गहलोत सरकार की वैधता पर संदेह जताया जा रहा है। जैसा कि ऐसे मामलों में आम तौर पर होता है, सरकार के बहुमत को लेकर दोनों धड़े परस्पर विरोधी दावे कर रहे हैं।

पायलट और उनके समर्थक विधायकों ने पार्टी छोड़ने की बात अब तक नहीं कही है, इसलिए इसे कांग्रेस का अंदरूनी झगड़ा ही माना जाएगा। इस झगड़े की वजहें चाहे जो भी रही हों और इसके लिए जिसे भी जिम्मेदार ठहराया जाए, इसका परिणाम यह हो रहा है कि प्रदेश की निर्वाचित सरकार अनिश्चय और असमंजस की स्थिति में फंसी हुई है। वह भी ऐसे समय, जब न केवल देश के तमाम राज्यों में बल्कि औरों के पहले से राजस्थान में कोरोना ने जनजीवन को अस्त–व्यस्त कर रखा है।

सरकारें, प्रशासनिक और स्वास्थ्य तंत्र अपनी पूरी ताकत लगाकर भी हालात को काबू में नहीं ला पा रहे हैं। इतना ही नहीं, भारत के एक बड़े हिस्से में पेड़–पौधों के काल बने टिड्डी दल भी राजस्थान के ही रास्ते देश में आ रहे हैं। याद रहे, टिड्डियों के प्रकोप की दृष्टि से जुलाई और अगस्त के महीने सबसे खतरनाक माने जाते हैं। आज जब कोरोना और टिड्डी दलों की दोहरी चुनौती के सामने राजस्थान में सर्वाधिक चौकस सरकार की जरूरत है, तब यह प्रदेश राजनीतिक अनिश्चय का शिकार बना हुआ है।

जाहिर है, देश और प्रदेश दोनों का हित इसी में है कि दोनों पक्षों के दावों को एक तरफ रखकर जल्द से जल्द बहुमत परीक्षण करवाया जाए, ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो सके। लेकिन कभी अदालती पेचीदगी से तो कभी गवर्नर हाउस की मेहरबानी से यह मामला लंबा ही खिंचता जा रहा है। अभी जब स्पीकर ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल अपनी याचिका कोर्ट की इजाजत से वापस ले ली है तो अनिश्चय दूर करने में देरी का कोई औचित्य नहीं है। अच्छी बात यह है कि देश में इस बात पर सर्वसम्मति बन चुकी है कि किसी भी सरकार के बहुमत का फैसला दावों और जवाबी दावों, या फिर विधायकों की परेड के आधार पर नहीं बल्कि विधानसभा के पटल पर ही हो सकता है।

देश के लोकतांत्रिक इतिहास में संभवतः यह पहला मौका है जब एक मुख्यमंत्री विधानसभा में अपना बहुमत साबित करने को बेकरार नजर आ रहा है, पर राज्यपाल की ओर से एक के बाद एक तकनीकी अड़चनें खड़ी करके बहुमत परीक्षण टालने का प्रयास किया जा रहा है। किसी गुट या दल के राजनीतिक हितों का तकाजा चाहे जो भी हो, राज्यपाल की ऐसी भूमिका उचित नहीं है। अगर वे इस बात को लेकर गंभीर नहीं हैं तो गृह मंत्रालय और केंद्र सरकार को उन्हें इसका एहसास कराना चाहिए।

## प्रभु प्रेम

धर्म-दर्शन

**अशोक वोहरा।** सद्गुरु प्रभु के प्रेम को हमारी ओर प्रसारित करते हैं। जब हम किसी वक्ता का व्याख्यान सुनते हैं, हम बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। जब हम एक आध्यात्मिक गुरु के पास जाते हैं तो वहां हम बौद्धिक ज्ञान से कहीं अधिक पाते हैं। ज्ञान के साथ ही हम अपनी आत्मा के उत्थान का भी अनुभव करते हैं। सद्गुहरु की संगत में शरीर से ऊपर उठने का अनुभव प्राकृतिक रूप से मिलता है। वह दयाधारा एक ऊर्जा है, जो हमारे विचार को शरीर से दिव्य चक्षु पर खींच लाती है। एक सद्गुरु की तवज्जो से हमारी आत्मा आत्मिक मंडलों का अनुभव करने लगती है। इस दिव्य अनुभव से हम उत्कृष्ट प्रेम में सराबोर हो जाते हैं। जब हम उस परमानंद को चख लेते हैं, तो हमेशा उसी में डूबे रहना चाहते हैं। प्रभु–प्रेम की चुंबकीय शक्ति इतनी शक्तिशाली होती है कि यह हमें दिव्य मादकता से भर देती है।

## संपादकीय

### बिजली गिरने की चेतावनी

गर्मियों में जब पुरवैया हवा चलनी शुरू होती है तो सूखे खेत और झुलसे किसानों के लिए राहत भरा माहौल बनाती है। इसी के साथ आती है बंगाल की खाड़ी से उठने वाली ठंडी हवा जो उत्तर भारत में मॉनसून लाती है। अभी मॉनसून का पहला चरण चल रहा है। खेतों में धान के बिचड़े (पौध) तैयार हो गए हैं और निचले इलाकों में जहां पानी जमा है, वहां रोपाई भी चल रही है। इसी बीच खेतों में काम करने वाले किसानों पर आसमान से काल बनकर बिजली भी गिर रही है। बीते हफ्ते आकाशीय बिजली गिरने से बिहार और उत्तर प्रदेश में 100 से ज्यादा लोगों की जान गई। बिहार के आपदा प्रबंधन केंद्र ने शुक्रवार शाम तक वज्रपात (ठनका) से 96 की मौत की पुष्टि की है। यह संख्या और बढ़ सकती है, क्योंकि काफी संख्या में लोग झुलसे भी हैं। वहीं उत्तर प्रदेश में इससे अब तक 24 लोगों की मौत हुई है। बिहार के गोपालगंज जिले में सबसे अधिक 13 लोगों की मौत हुई है। जिले के अकेले बरौली प्रखंड में चार लोगों की जानें गई हैं। ये चारों अपने खेतों में धान के बिचड़े (पौध) उखाड़ने गए थे, तभी इन पर बिजली गिरी। हालांकि घटना के तीसरे दिन से ही कुछ इलाकों में मृतकों के परिजनों को मुआवजे के रूप में चार–चार लाख रुपये का चेक दिया जाने लगा है। विजयीपुरी के गुमरिया गांव में जब मुखिया और वॉर्ड सदस्य मुआवजे का चेक देने आए, तो वहां का माहौल बड़ा गमगीन बन गया। 12 वर्ष की अफसाना खातून के पिता ने मुआवजे की राशि लेने से इनकार कर दिया। उनका कहना था कि जब बेटी ही नहीं रही तो मुआवजा किसके लिए लेंगे। भारी वर्षा और बिजली गिरने की आशंका को लेकर पूरे राज्य में 72 घंटे का अलर्ट जारी किया गया है।

प्रेम विवाहों की भी संख्या बढ़ी है, फिर भी भारत की परिवार अदालतों में मियां–बीवी सालों साल लड़ते रहते हैं। बेहतरी इसी में है कि नहीं निभ रही है तो आपस में बातचीत करके अलग हो जाएं।

# घिसटते रिश्ते पर विराम

मोनिका शर्मा।

इसी महीने गुवाहाटी हाई कोर्ट ने पत्नी के सिंदूर लगाने और चूड़ी पहनने से इनकार करने पर एक व्यक्ति को पत्नी से तलाक लेने की अनुमति दी। अदालत ने कहा कि महिला रीति–रिवाजों को नहीं मान रही, इसका मतलब है कि वह शादी को स्वीकार नहीं कर रही है। पत्नी का भी यही कहना था कि वह उस आदमी को अपना पति नहीं मानती। फिर भी तलाक के लिए दोनों के बीच लंबा मुकदमा चला, बल्कि हाई कोर्ट से पहले फैमिली कोर्ट ने तलाक का फैसला देने से भी मना कर दिया था।

इस मामले में मुकदमा लड़ने वाले पति–पत्नी की शादी 2012 में हुई थी और अगले ही साल पत्नी ने शादी को मानने से इन्कार करते हुए पति का घर छोड़ दिया था। इसके बाद पति ने फैमिली कोर्ट में तलाक की एप्लीकेशन लगाई थी, जो वहां से खारिज हो गई थी। फिर मामला हाई कोर्ट पहुंचा, जहां पत्नी ने बयान दिया था, 'मैं अभी सिंदूर नहीं लगा रही हूं क्योंकि मैं इस आदमी को अपना पति नहीं मानती।' इसके बाद फैसला देते हुए हाई कोर्ट ने कहा कि फैमिली कोर्ट ने उचित परिप्रेक्ष्य में साक्ष्यों का मूल्यांकन नहीं किया है। साथ यह भी कहा कि प्रतिवादी यानी कि पत्नी का ऐसा रुख उसके स्पष्ट इरादे

की ओर इशारा करता है कि वह पति के साथ अपने वैवाहिक जीवन को जारी रखने के लिए तैयार नहीं है। ऐसे में पति का पत्नी के साथ विवाह में बने रहना, अपीलकर्ता पति और उसके परिवार के सदस्यों का उत्पीड़न माना जाएगा।

हाल के वर्षों में वैवाहिक संबंधों में पेचीदगियां बढ़ी हैं। ऐसे में यह सिंदूर और शांखा न अपनाने का मामला नहीं, बल्कि एक घिसटते रिश्ते पर विराम लगाकर जिंदगी में आगे बढ़ने की बात कहने वाला फैसला है। इस मुकदमे में पत्नी ने पति और उसके परिवार के खिलाफ तीन आपराधिक शिकायतें दर्ज की थीं, जिसमें घरेलू हिंसा और दहेज प्रताड़ना प्रमुख थी। पिछले महीने पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट ने दहेज प्रताड़ना के कानून पर कहा था कि इसका इस्तेमाल गलत तरीके से करना अब आम बात हो गई है। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल कहा था कि ऐसे मामलों में आरोपों की पुष्टि हो जाने तक कोई गिरफ्तारी ना की जाए। अगर महिला जख्मी है या प्रताड़ना से उसकी मौत हो जाए तो ऐसा केस इन गाइडलाइंस के दायरे से बाहर होगा।

हमारी अदालतें बार–बार ऐसे मामलों में दिशा–निर्देश देती रही हैं, इसके बावजूद तलाक के केसों में पेचीदगियां घटने का नाम नहीं ले रही हैं। बजाय इसके कि शांति से तलाक लेकर अपना जीवन नए सिरे से सुनियोजित किया जाए, तलाक चाहने वाले अधिकतर लोग इन्हीं झगड़ों में फंसे रहे। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक 2012 में धारा 498ए (दहेज प्रताड़ना) के तहत करीब 2 लाख लोगों की गिरफ्तारी हुई, जो 2011 के मुकाबले 9.4 फीसद ज्यादा थी। गिरफ्तार हुए लोगों में लगभग एक चौथाई महिलाएं थीं। झूठे मामलों के कारण ही हमारे यहां इस धारा में चार्जशीट की दर 93.6 फीसद है, जबकि सजा की दर महज 15 फीसद। भारतीय समाज में पिछले कुछ वर्षों में दहेज के प्रति काफी चेतना आई है और प्रेम विवाहों की भी संख्या बढ़ी है, फिर भी भारत की परिवार अदालतों में मियां–बीवी सालों साल लड़ते रहते हैं। बेहतरी इसी में है कि नहीं निभ रही है तो आपस में बातचीत करके अलग हो जाएं।

### अष्टयोग- 5132

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 5 | | 3 | 6 | | |
| | 33 | | 32 | | 28 | |
| 2 | | 7 | | | 6 | 1 |
| | 30 | 2 | 37 | 4 | 34 | |
| 5 | 1 | | | 7 | | 4 |
| | 26 | | 38 | | 36 | |
| | 1 | 5 | 6 | | | |

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

**अष्टयोग 5131 का हल**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | 7 | 3 | 1 | 4 | 6 | 2 |
| 6 | 31 | 1 | 25 | 5 | 33 | 1 |
| 3 | 1 | 5 | 4 | 2 | 6 | 7 |
| 4 | 27 | 2 | 28 | 1 | 37 | 6 |
| 2 | 3 | 7 | 1 | 6 | 5 | 4 |
| 7 | 36 | 6 | 37 | 3 | 35 | 3 |
| 1 | 6 | 4 | 3 | 7 | 2 | 5 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अपना ब्लॉग

### मौसम में होने वाले परिवर्तन

**मोहन।** मौसम में होने वाले परिवर्तन और उससे आने वाली आपदा के बारे में पता लगाया जा सकता है। भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के दामिनी ऐप से बिजली गिरने से पहले ही जानकारी मिल जाती है। लेकिन हमारे सूचना तंत्र ठीक से विकसित ही नहीं हैं। पता लग भी जाता है, तो ग्रामीण इलाकों तक इसकी सूचना नहीं पहुंच पाती है। अमेरिका जैसे देशों में संचार सुविदाएं बेहतर हैं, इसलिए भारत की तुलना में आकाशीय बिजली गिरने से विकसित देशों में मौत की घटनाएं कम होती हैं।
बिजली अक्सर खुली जगहों में, जहां घने पेड़ नहीं होते हैं, वहां गिरती है। साथ ही इसके धातु के सामानों, ऊंचे पेड़ों, बिजली के खंभों पर और जलाशयों में गिरने की भी आशंका ज्यादा रहती है। शहरों में घर सटे–सटे रहते हैं, उनमें तड़ित चालक लगे रहते हैं, जिससे वहां बिजली गिरने की आशंका कम रहती है।